IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का अध्ययन''

Study Of Educational Interest Of Higher Secondary Level Students

***Anita, **Dr.Usha Rathore**

*Rsearch Scholar, Department of Education, HBUTT College, MDS University, Ajmer, Rajasthan, India

**Research Guide, Department of Education, HBUTT College, MDS University, Ajmer, Rajasthan, India

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरूचि का अध्ययन करना है। विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का आकलन करने से अन्य विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान की जा सकती है। इस हेतु शोधार्थी ने शोध के मुख्य उद्देश्य में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का अध्ययन करने हेतु निर्धारित शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण में शैक्षिक अभिरूचि उपकरण का प्रयोग किया है। इसका प्रशासन उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में राजस्थान के झुन्झुनू और अलवर जिले से 160 विद्यार्थियों पर किया गया। प्रमुख सम्प्राप्तियों में पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नही है। आँकड़ो के सकंलन हेतु शैक्षिक अभिरूचि का मापन – एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित मापनी का उपयोग किया गया है। प्रदत्तो के विश्लेषण हेतु मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान, सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्दावली : उच्च माध्यमिक, विद्यार्थी, शैक्षिक अभिरूचि, कला संकाय, विज्ञान संकाय।

प्रस्तावना :

वर्तमान में अभिभावक एवं विद्यार्थी दोनों असमंजस की स्थिति में हैं। अभिभावक अपने बच्चों से प्रतिभा प्रदर्शन की उम्मीद करता है वह चाहता है कि उनका बच्चा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करे। विद्यार्थी, अभिभावकों एवं विद्यालय की उम्मीदों को लेकर तनाव में रहता है। यहां जरूरत विद्यार्थी को समझाने की है कि किस विद्यार्थी से कितनी उम्मीद की जा सकती है ? क्या कारण है कि कुछ विद्यार्थी ही सर्वश्रेष्ठ होते हैं। उन कारणों को जानकर विद्यार्थियों के प्रदर्शन को सुधारा जा सकता है। इन्हीं विचारों ने शोधार्थी को इस विषय के समीचीन होने का बोध कराया।

मनुष्य के जीवन में अभिरूचि का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब यह अभिरूचि विद्यार्थियों से सम्बन्धित हो तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि में इनका महत्त्व बढ़ जाता है। अधिगम उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु विद्यार्थियों को अधिगम के लिए प्रेरित करना अति आवश्यक होता है। विद्यार्थी किसी कार्य को तभी सीख सकते हैं जब उनमें उस कार्य के प्रति रूचि हो और यह रूचि प्रेरणा से ही संभव है। **थॉमसन** ने कहा है कि ''प्रेरणा छात्रों में रूचि उत्पन्न करने की कला है।''

वर्तमान में प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिरूचि के संदर्भ में यदि देखा जाए तो विद्यार्थियों की परिस्थितियों के अनुसार किसी न किसी विषय के प्रति रूचि अवश्य बन जाती है, लेकिन विषय चयन के समय विद्यार्थी की रूचि, क्षमता आदि का ध्यान न रखकर कुछ मामलों में उन पर अन्य विषय थोप दिया जाता है। ऐसी स्थिति में उसकी शिक्षा चौपट हो जाती है। इस शोध कार्य के माध्यम से विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों की अध्यापन व्यवसाय के प्रति अभिरूचि को जानकर ऐसी समस्याओं से बचा जा सकेगा एवं विद्यार्थी अपना अमूल्य योगदान राष्ट्र को दे सकेंगे।

अध्ययन की प्रभावशीलता का पता शैक्षिक अभिरूचि से ही चलता हैं। अतः छात्र–छात्राओं के अध्ययन को प्रभावशाली बनाने के लिए छात्र–छात्राओं में शैक्षिक रूचि को विकसित किया जाना चाहिए क्योंकि शैक्षिक अभिरूचि को विकसित करने से ही विद्यार्थी पढ़ने में रूचि ले सकेंगे। और मन लगाकर अपने अध्ययन कार्य को प्रभावी बनाने का प्रयास करते रहेंगे।

अध्ययन की प्रभावशाली आदतों का विकास न कर सकने के कारण ही वे अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में विफल होते है। जो छात्र अपने अध्ययन में सफलता प्राप्त करते है, वे साधारणतः अकेले अध्ययन करते है, या अनुसरण करते है। ये छात्र सफल होने के कारण अपने उद्देश्यों को प्राप्त करते है। यदि इस उद्देश्य का सम्बन्ध उनकी किसी विशिष्ट इच्छा से होता है, तो वह अपनी सम्पूर्ण शक्ति को अध्ययन में लगा देते है। किन्तु यह बात कुछ ही छात्रों के विषय में कही जा सकती है। अधिकांश छात्र, अध्ययन में रूचि नहीं लेते है और उससे दूर रहने का प्रयास करते है। ऐसे छात्रों की शिक्षक द्वारा सहायता की जा सकती है और उसे करनी भी चाहिए।

वर्तमान में शिक्षा के गिरते स्तर का मुख्य कारण यही है। अतः शिक्षक का यह महत्त्वपूर्ण कर्तव्य है कि वह बालक की बुद्धिलब्धि के स्तर को जानकर उसमें उचित शैक्षिक अभिरूचि का विकास कर उसे उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करें।

मर्फी के शब्दों में– "अभिरुचियाँ उद्देश्यों से जुड़े अनुबंधित उद्दीपक होते हैं, जो वातावरण की वांछित वस्तुओं, पदार्थों, क्रियाओं व मनुष्यों के गुणों के प्रति पसंद एवं नापसंद के रूप में अभिव्यक्ति होते हैं।"

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि अभिरुचि एक प्रेरणा–शक्ति है जो व्यक्ति को कुछ करने या किसी वस्तु अथवा पदार्थ की ओर ध्यान देने के लिए प्रेरित करती है। अभिरुचियों के संबंध वातारण की वस्तुओं व पदार्थों से होता है तथा वंशानुक्रम से संबंधित कारक अभिरुचियों को प्रभावित करते है। अभिरुचि व्यक्ति को सीखने में आने वाले अवरोधों को दूर करने में सहायता करती है। इसलिए थकान व असफलता की स्थिति में प्रतिरोधक शक्ति का कार्य करती है। शैक्षिक अभिरूचि चर के सन्दर्भ में पूर्व में हुए शोध का मुख्य लक्ष्य इस प्रकार से था जैसे अध्ययन आदते, मानसिक योग्यता, विद्यार्थियों के ध्यान की एकाग्रता से संबंधित पूर्व शोध कार्य हुए हैं। विद्यार्थियों में वातावरण (सरकारी–गैर सरकारी) के अनुसार शैक्षिक अभिरूचि तथा इसके संबंध में अनेकों प्रकार की गतिविधियाँ जो कक्षागत एवं अध्ययन के लिए सम्पन्न करता है। विद्यार्थियों के लिए परिवार के अभिभावकों का सहयोग एवं प्रेरणा के साथ–साथ उसके शैक्षिक रूचि की भूमिका को अस्वीकार नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध कार्य शैक्षिक अभिरूचि के प्रभाव की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। इसके माध्यम से यह जानकारी प्राप्त की जा सकेगी कि एक विद्यार्थी की शैक्षिक अभिरूचि को प्रभावित करने वाले कारक कौन–कौन से है जिससे कि अन्य विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में वृद्धि करने तथा उत्तम शैक्षिक अभिरूचि के निर्माण हेतु

इसका अध्ययन आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोध का मुख्य लक्ष्य है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का अध्ययन करके अन्य सामान्य विद्यार्थियों के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य प्रस्तुत कर सके।

समस्या कथन :–

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का अध्ययन''

ैजनकल वि मकनबंजपवदंस पदजमतमेज वि ीपहीमत`मबवदकंतल समअमस`जनकमदजे

अध्ययन के उद्देश्य :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् कला संकाय विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् कला संकाय विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का क्षेत्र एवं न्यादर्श :

समष्टि में शोधार्थी द्वारा न्यादर्श में राजस्थान राज्य में शोध कार्य के लिए राजस्थान के झुन्झुनू और अलवर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल किया है। शोधार्थी द्वारा न्यादर्श हेतु सर्वप्रथम झुन्झुनू और अलवर जिले के उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में कला संकाय में अध्ययनरत् लगभग 160 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि इसका यह अभिप्राय है कि हमें निश्चित चयन विधि पर विश्वास करना है यही यादृच्छिक कहलाती है जो बहुत बड़े समूह या जनसंख्या को बिना किसी पक्षपात के उपलब्ध करा सके। इसलिए शोधार्थी ने यादृच्छिक विधि का प्रयोग करके न्यादर्श का चयन किया।

शोध की विधि एवं प्रक्रियाएं :

शोध की प्रकृति व सर्वेक्षण विधि की उपयोगिता के आधार पर शोधार्थी ने प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त उपकरण शैक्षिक अभिरूचि का मापन – एस. पी. कुलश्रेष्ठ का प्रयोग किया है। अध्ययन में प्रयुक्त सर्वेक्षण विधि तथा मानकीकृत उपकरण का चयनित विद्यार्थियों पर प्रशासन करना एक महत्वपूर्ण सोपान है। इस हेतु झुन्झुनू और अलवर जिले में स्थित उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संस्था प्रधानों (प्राचार्य/प्राचार्या) से शोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क किया गया। उन्हें शोधकार्य के उद्देश्य से अवगत करवाया और उपकरण के प्रशासन की अनुमति प्राप्त की गई। तत्पश्चात् निर्देशित कक्षा में जाकर उपकरणों में दिये गये निर्देशों की अक्षरशः पालना करते हुए शैक्षिक अभिरूचि की अनुसूचि का प्रशासन किया गया। तत्पश्चात् इन उपकरण की जाँच अंकन योजना के अनुसार की गई। इस प्रकार उपकरण की सहायता से प्रदत्तों एवं सूचनाओं को एकत्रित किया गया तथा उन्हें व्यवस्थित, वर्गीकृत व सारणीबद्ध किया गया। इन आंकड़ों का विश्लेषण व व्याख्या प्रस्तुत की गई है। परीक्षणों के मूल प्राप्तांको का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान (छ), प्रमाप विचलन ैक) एवं टी–मान, क्रान्तिक अनुपात मान (ब्त्–टंसनम), की गणना की गई।

परिकल्पनाएँ सं. 1– उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् कला संकाय विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका

मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन

विद्यार्थी	छ	ड	ैक	ैम्क	क	कि	ब्ण्ए
सरकारी	80	26.8	2.63	0.37	0.35	158	0.97
गैर सरकारी	80	27.51	2.11				

'' 0ण्05 ***सार्थक स्तर***

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरूचि के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 26.8 व 27.51 तथा दोनों समूहों का मानक विचलन क्रमशः 2.63 तथा 2.11 है। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 0.37 है तथा मध्यमानों का अन्तर 0.35 है। दोनों समूहों का आलोचनात्मक अनुपात 0.97 है जो कि 158 स्वतंत्रता के अंश हेतु सार्थकता स्तर 0.05 पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 से कम है। अतः हमारी परिकल्पना निरस्त नहीं होती है अर्थात् सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

हालांकि सरकारी विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरूचि का मध्यमान (26.8) व गैर सरकारी विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरूचि के मध्यमान (27.51) से कम है। किन्तु दोनों के मध्यमान में सार्थक अन्तर नहीं है जो भी अन्तर है वह संयोगवश है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी व गैर सरकारी विद्यार्थियों में शैक्षिक अभिरूचि समान रूप में पाई जाती है।

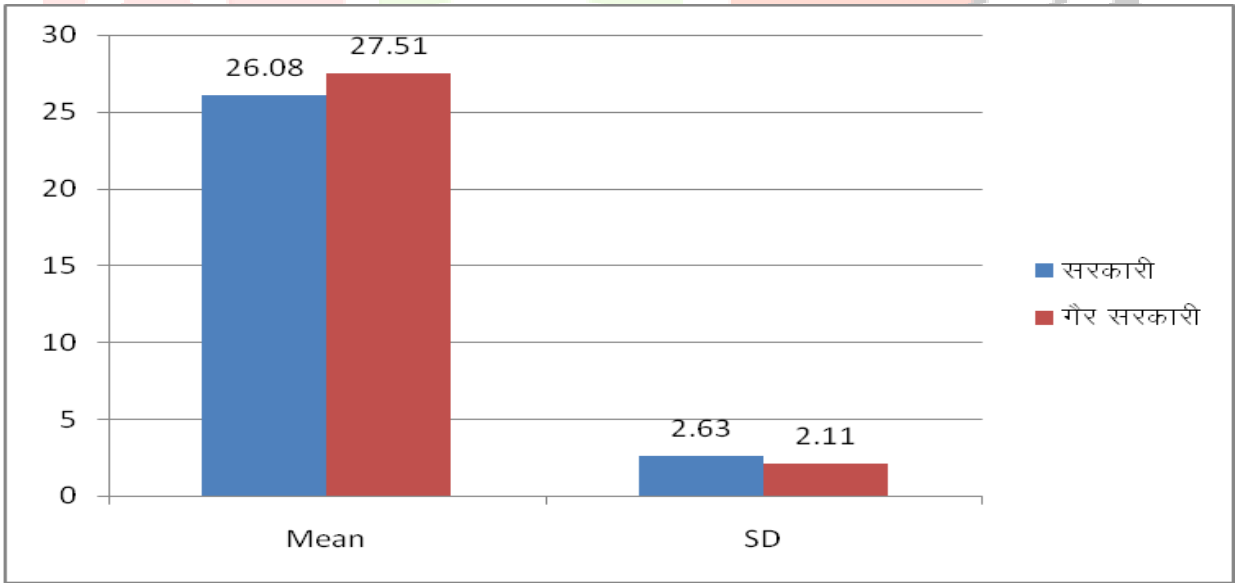

हिन्दी संदर्भ साहित्य

- अस्थाना, विपिन (1994) : मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
- अग्रवाल, ईश्वर प्रकाश एवं अनिता, (1995) : बाल विकास एवं शैक्षिक क्रियाएं, नई दिल्ली, आर्य बुक डिपो करोलबाग।
- अरोड़ा, रीता एवं मारवाह, सूरेश (2001) : शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी के आधार, जयपुर, 23 चौड़ा रास्ता
- आचार्य, पं. शर्मा श्रीराम (1995) : भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व, मथुरा, अखण्ड ज्योति संस्थान, प्रथम सस्करण।
- आचार्य, पं. शर्मा श्रीराम (1996) : शिक्षा एवं विद्या, अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, प्रथम सस्करण।
- कपिल एच.के. (2004) : अनुसंधान विधियाँ, आगरा, एच. पी. भार्गव बुक हाऊस, 4/230, कचहरी घाट।
- गुप्ता, एम.एल. एवं शर्मा डी.डी. (1997) : भारतीय समाज, आगरा, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स ।
- खान, ए.आर. (2005) : जीवन कौशल शिक्षा, अजमेर, राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड।
- गुप्त, नत्थूलाल (2000) : मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नई दिल्ली, नमन प्रकाशन
- गौड, अनिता (2005) : बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारें, नई दिल्ली, राज पाकेट बुक्स